• अवसर विशेष...

संगीत...

संगीत एक ऐसी चीज है जो हर किसी को पसंद है। लोगों के पास अलग-अलग पसंद और प्राथमिकताएं हो सकती हैं, लेकिन मुख्य रूप से शायद ही कोई होगा जो संगीत को न पसंद करता होगा। समय के साथ, अलग-अलग तरह के संगीत आए हैं, जो हमारे पास विभिन्न देशों से या एक दूसरे से साझा करने से आये है। वर्ष 1982 में अंग्रेजी का संगीत दिवस फ्रांस में संस्कृति मंत्री जैक लैंग द्वारा पेरिस में आयोजित किया गया था। यह यहां तक कि मौरिस फ्ल्यूरेट की मदद से सफलतापूर्वक हुआ, जो इस आयोजन के लिए संगीत के नियुक्त निदेशक थे।

यह इवेंट इस प्रकार काफी सफल रहा जिसमें लोगों नें अपने गलियों में विभिन्न प्रकार के संगीत बजाएं। इस घटना को दुनिया भर के देशों ने सराहा और जल्द ही लगभग 120 विभिन्न देशों ने इस संस्कृति को अपनाया। यह वह दिन है जब विभिन्न संगीतकार सड़कों और अन्य सार्वजनिक स्थानों पर अपना संगीत प्रदर्शित करते हैं। इसके अलावा, अब इस दिन मनाने के लिए कई कॉन्सर्ट मुफ्त में आयोजित किये जाते हैं।

विश्व संगीत दिवस की शुरुआत संगीत के सुखदायक प्रकृति के बारे में जागरूकता फैलाने के उद्देश्य से हुई थी। इसके अलावा, दो सबसे स्पष्ट कारण थे जिनमें से पहला है शौकिया दर्शकों को अपनी प्रतिभा को दर्शकों के सामने प्रदर्शित करने के लिए एक मंच प्रदान करना। इसके साथ ही, दूसरा कारण यह है कि कई मुफ्त संगीत कार्यक्रम आयोजित किए जा सकते हैं ताकि दर्शकों को संगीत की विभिन्न शैलियों के बारे में पता चल सके और दुनिया भर से संगीत के विभिन्न रूपों के बारे में पता चल सके। कई देशों का यह भी मानना है कि संगीत के लाभों के बारे में जागरूकता फैलाने के लिए विश्व संगीत दिवस मनाया जाता है। विभिन्न देश अलग-अलग तरीके से विश्व संगीत दिवस मनाते हैं। फ्रांस ने पारंपरिक तरीके को बनाए रखा जब से संस्कृति शुरू हुई और उन इवेंट की व्यवस्था की जहां संगीतकार सड़कों पर संगीत बजा सकते हैं। आज कई देश हैं जो फ्रांस के समान ही पैटर्न का पालन करते हैं। लेकिन कई अन्य राष्ट्र भी हैं जिन्होंने विश्व संगीत दिवस मनाने के अन्य तरीके भी निकाले हैं। कुछ छोटे संगठन या समूह सार्वजनिक स्थान जैसे कि किसी मॉल या किसी व्यस्त सड़क पर पर फ्लैश मॉब शो आयोजित करते हैं।

• लॉकडाउन में...

अंतरराष्ट्रीय योग दिवस

अंतरराष्ट्रीय योग दिवस 21 जून को मनाया जाता है. यह दिन वर्ष का सबसे लम्बा दिन होता है और योग भी मनुष्य को दीर्घ जीवन प्रदान करता है। पहली बार यह दिवस 21 जून 2015 को मनाया गया, जिसकी पहल भारत के पीएम नरेन्द्र मोदी ने 27 सितम्बर, 2014 को संयुक्त राष्ट्र महासभा में अपने भाषण से की थी, जिसके बाद 21 जून को-अंतरराष्ट्रीय योग दिवस- घोषित किया गया। 11 दिसम्बर 2014 को संयुक्त राष्ट्र में 177 सदस्यों द्वारा 21 जून को -अंतरराष्ट्रीय योग दिवस- को मनाने के प्रस्ताव को मंजूरी मिली। पीएम मोदी के इस प्रस्ताव को 90 दिन के अंदर पूर्ण बहुमत से पारित किया गया, जो संयुक्त राष्ट्र संघ में किसी दिवस प्रस्ताव के लिए सबसे कम समय है। हर साल की तरह इस साल भी योग दिवस को एक थीम दी गई है। लेकिन इस साल कोरोनावायरस महामारी यानी कोविड 19 के चलते लोगों को ऐसी थीम दी गई है, जो सेहत और स्वस्थ्य को बढ़ावा देगी। अंतरराष्ट्रीय योग दिवस 2020 थीम है घर में रहते हुए अपने परिवार के साथ योग करना।

योग, भारतीय ज्ञान की पांच हजार वर्ष पुरानी विरासत है, जिसके प्रणेता महर्षि पतंजलि को माना जाता है। योग साधना में जीवन शैली का पूर्ण सार समाहित किया गया है। दरअसल 21 जून उत्तरी उत्तरी गोलार्द्ध का सबसे लंबा दिन होता है, जिसे कुछ लोग ग्रीष्म संक्रांति भी कहकर बुलाते हैं। भारतीय परंपरा के अनुसार ग्रीष्म संक्रांति के बाद सूर्य दक्षिणायन हो जाता है। कहा जाता है कि सूर्य के दक्षिणायन का समय आध्यात्मिक सिद्धियां प्राप्त करने में बहुत लाभकारी होता है इसी वजह से 21 जून को 'अंतरराष्ट्रीय योग दिवस' के रूप में मनाते हैं।

पीएम नरेंद्र मोदी और गणमान्य सहित करीब 36000 लोगों ने, 21 जून 2015 को नई दिल्ली में पहले अंतरराष्ट्रीय योग के लिए 35 मिनट तक 21 योग आसन का प्रदर्शन किया था। योग दिवस दुनिया भर में लाखों लोगों द्वारा मनाया गया। राजपथ पर हुए समारोह ने दो गिनीज रिकॉर्ड्स की स्थापना की सबसे बड़ी योग क्लास 35,985 लोगों के साथ और 44 देशों के लोगों द्वारा इस आयोजन में एक साथ भाग लेने का रिकॉर्ड भी अपने नाम किया। लेकिन इस साल कोरोना महामारी के कारण अंतरराष्ट्रीय योग दिवस धूमधाम से नहीं मनाया जाएगा। ऐसे में आपको घर पर रहकर ही योग करना होगा।

फादर्स डे...

वैसे तो, माता-पिता के लिए कोई एक खास दिन निर्धारित नहीं किया जा सकता लेकिन उन्हें किसी दिन के बहाने स्पेशल फील कराया जा सकता है।

घर की जिम्मेदारियों को कंधे पर उठाकर सुबह घर से निकल जाते हैं। जिन्हें परिवार में सबसे कड़क मिजाज समझा जाता रहा है। पिता की छवि हमारे समाज ने कुछ ऐसी ही गढ़ी है। हालांकि, वक्त के साथ अब पिता बच्चों के दोस्त भी बन रहे हैं। अब उनके घर वापस आने पर डर का माहौल नहीं बल्कि हंसी-खुशी का नजारा देखने को मिलता है। वैसे तो, माता-पिता के लिए कोई एक खास दिन निर्धारित नहीं किया जा सकता लेकिन उन्हें किसी दिन के बहाने स्पेशल फील कराया जा सकता है। जिस प्रकार पूरी दुनिया मां को सम्मान देने के लिए मदर्स डे मनाती है उसी प्रकार पिता को सम्मान देने के लिए फादर्स डे मनाया जाता है। पूरी दुनिया 21 जून को फादर्स डे सेलिब्रेट करती है। फादर्स डे को अलग-अलग अंदाज में मनाया जाता है। कुछ बच्चे इस दिन अपने पिता को उपहार देते हैं और कुछ तरह-तरह की चीजें कर उनका दिन स्पेशल बनाते हैं। कुछ लोग इस दिन अपने पिता के साथ बाहर घूमने जाते हैं तो कुछ लोग इस दिन पिता के लिए स्पेशल खाना भी बनाते हैं। लेकिन इस बार का फादर्स डे कुछ अलग होगा। इस साल दुनिया में कोरोना महामारी के कारण आप घर पर रहकर ही फादर्स डे मनाएं।

जिस प्रकार पूरी दुनिया मां को सम्मान देने के लिए मदर्स डे मनाती है उसी प्रकार पिता को सम्मान देने के लिए फादर्स डे मनाया जाता है। पूरी दुनिया 21 जून को फादर्स डे सेलिब्रेट करती है। फादर्स डे को अलग-अलग अंदाज में मनाया जाता है...

फादर्स डे को मनाने को लेकर इतिहासकारों में मतभेद है। कुछ इतिहासकार का कहना है कि इसे 1907 में सबसे पहली बार वर्जीनिया में मनाया गया था। हालांकि, इसका आधिकारिक विवरण नहीं है। इसके लिए कुछ इतिहासकार 19 जून 1910 को आधिकारिक मानते हैं। इसकी शुरुआत सोनेरा डोड ने की थी। जब सोनेरा छोटी थी तो उनकी मां का निधन हो गया। उस समय सोनेरा डोड के पिता विलियम स्मार्ट ने उनकी परवरिश की। विलियम स्मार्ट ने सोनेरा डोड को मां की कमी कभी खलने नहीं दी। जब सोनेरा बड़ी हुई, तो उसने मदर्स डे की तरह फादर्स डे मनाने पर बल दिया। उन्हीं दिनों सोनेरा ने पिता के सम्मान में फादर्स डे पहली बार मनाया था, जिसे 1924 में तत्कालीन अमेरिकी राष्ट्रपति कैल्विन कोली ने आधिकारिक मंजूरी दे दी। हालांकि, 1966 में राष्ट्रपति लिंडन जानसन ने इसे जून महीने के तीसरे रविवार को मनाने की सहमति दी। उस समय से हर साल यह जून महीने के तीसरे रविवार को मनाया जाता है।

बच्चों की लाइफ में जितनी अहम भूमिका मां की होती है उतनी ही पिता की भी। लेकिन मदर्स डे सेलिब्रेशन की धूम ज्यादा देखने को मिलती है। ये अच्छा मौका होता है जब आप अपने पिता को हर उस चीज़ के लिए धन्यवाद कह सकते हैं जो उनकी वजह से हासिल हुई हैं। इसे सेलिब्रेट करने का कोई प्रचलित तरीका नहीं है। जहां कोई गले मिलकर, गिफ्ट देकर इसे मनाता है वहीं कुछ लोग फादर्स के साथ ट्रिप प्लान कर, उन्हें लंच या डिनर पर ले जाकर इसे स्पेशल बनाते हैं।

फादर्स डे पर अपने पिता को मन की बातें बताने के लिए उन्हें पत्र लिख सकते हैं। खत में लिखी गई बातें कभी मिटती नहीं हैं और आप अपनी भावनाएं जाहिर करने में झिझक भी महसूस नहीं करेंगे। इस फादर्स डे पर खत के जरिए पापा के प्रति अपना प्यार और भावनाएं जाहिर कर सकते हैं।

यदि आपके पापा को तरह-तरह की किताबें पढ़ना पसंद है, तो यह भी उन्हें गिफ्ट कर सकते हैं। अपनी मम्मी से जानने की कोशिश करें कि कौन सी किताब आपके पापा खरीदने का सोच रहे हैं। वही, किताब आप झटपट ऑनलाइन ऑर्डर कर दें या बुक स्टोर से जाकर खुद ही ले आएं।

• प्रयास...

विश्व शरणार्थी दिवस...

प्रत्येक वर्ष 20 जून को विश्व शरणार्थी दिवस मनाया जाता है। यह दिन दुनिया भर में शरणार्थी की स्थिति के बारे में जागरूकता बढ़ाने के लिए समर्पित है। 2019 विश्व शरणार्थी दिवस का विषय है। विश्व शरणार्थी दिवस पर एक कदम उठाएं।। यह थीम उम्मीद करती है। समुदायों, स्कूलों, व्यवसायों, विश्वास समूहों और जीवन के सभी क्षेत्रों के लोगों को शरणार्थियों के साथ एकजुटता में बड़े और छोटे कदम उठाने चाहिए। शरणार्थी एक व्यक्ति है जिसे युद्ध, उत्पीड़न या प्राकृतिक आपदा से बचने के लिए अपने देश को छोड़ने के लिए मजबूर किया गया है। संयुक्त राष्ट्र महासभा ने निर्णय लिया कि 2000 से 20 जून को विश्व शरणार्थी दिवस के रूप में मनाया जाएगा। महासभा ने उल्लेख किया कि 2001 ने 1951 कन्वेंशन की 50 वीं वर्षगांठ को शरणार्थियों की स्थिति से संबंधित बताया। 2000 से पहले, अफ्रीकी शरणार्थी दिवस औपचारिक रूप से कई देशों में मनाया गया था। अफ्रीकी एकता संगठन ने 20 जून को अफ्रीका शरणार्थी दिवस के साथ अंतर्राष्ट्रीय शरणार्थी दिवस के आयोजन के लिए N के निर्णय के लिए सहमति व्यक्त की थी।

• क्षमा याचना...

क्षमा शब्द मानवीय जीवन की आधारशिला है। जिसके जीवन में क्षमा है, वही महानता को प्राप्त कर सकता है। क्षमावाणी हमें झुकने की प्रेरणा देती है। दसलक्षण पर्व हमें यही सिख देता है कि क्षमावाणी के दिन हमें अपने जीवन से सभी तरह के बैर भाव-विरोध को मिटाकर प्रत्येक व्यक्ति से क्षमा मांगनी चाहिए और हम दूसरों को भी क्षमा कर सकें यही भाव मन में रखना चाहिए। यही क्षमावाणी है। सभी को जय जिनेंद्र का नाम लेकर झुकना सीखना चाहिए, क्योंकि क्षमा हमें झुकने की प्रेरणा देती है।